राजस्थान की कठपुतली कला का सांस्कृतिक व कलात्मक विश्लेषण

चित्रकला विषय में पी-एच.डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत-शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्रा

पूनम कुमारी

निर्देशिका

डॉ. नमिता त्यागी

असिस्टेंट प्रोफेसर

ड्राइंग एण्ड पेण्टिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग आगरा

2023

शोध संकल्पना

कला विचारों अनुभवों एवं भावनाओं से निर्मित चित्र, संगीत, भाषा, मुद्रा गति एवं भाव भंगिमाओं के माध्यम से सुनियोजित अभिव्यक्ति है। कला समाज के हाथ में एक ब्रह्मास्त्र है, जिसके द्वारा वह अपने भावों को रूप देता है। भारतीय कला भारतवर्ष के विचार धर्म, दर्शन एवं तत्वज्ञान का दर्पण है। यहाँ कण-कण छन्द राग तथा रस से भरा हुआ है।

भारत की असली पहचान उसकी विविध संस्कृति से है जो अपने गानों, संगीत, नृत्य, रंगमंच, लोक परम्पराओं, प्रदर्शन कला, संस्कार, अनुष्ठान, चित्रकला तथा लेखन के लिए पूरे विश्व में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। यहाँ के प्रत्येक प्रदेश की अपनी एक विशेष शैली व पद्धति है जिसे लोक कला के नाम से जाना जाता है, इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारतीय ग्रामीण सभ्यता का है। भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब लोक कलाओं में झलकता है, जो क्षेत्र अथवा समुदाय विशेष के लोगों द्वारा किया गया कलाकर्म है, इन्हीं लोक कलाओं में कठपुतली कला भी शामिल है। यह देश की सांस्कृतिक धरोहर होने के साथ-साथ प्रचार प्रसार का सशक्त माध्यम भी है। ये कठपुतलियाँ प्राचीन काल से ही मनोरंजन और शैक्षिक उद्देश्यों से भारत में रूचि की विषय-वस्तु रही है।

कठपुतली का इतिहास बहुत पुराना है मोहनजोदड़ो व हड़प्पा के उत्खनन स्थलों से सॉकेट युक्त कठपुतलियाँ मिली हैं जिससे कला के एक रूप में कठपुतली कला की उपस्थिति का पता चलता है। कठपुतली के रंगमंच के कुछ संदर्भ 500 ईसा पूर्व के आस-पास की अवधि में मिले हैं। यद्यपि कठपुतली का प्राचीनतम लिखित संदर्भ प्रथम एवम् द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व के आस-पास रचित तमिलग्रंथ 'शिल्पादिकारम' में मिलता है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में पाणिनी की अष्टाध्यायी में 'नटसूत्र' में पुतला नाटक का उल्लेख मिलता है।

कठपुतली के प्रारम्भ की कई कथाऐं लोकजीवन में प्रचलित हैं; इनमें शिव पार्वती के प्रसंग बहुतायत से मिलते हैं शिवजी ने काठ की मूर्ति में प्रवेश कर पार्वती का मन बहलाकर इस कला की शुरूआत की थी। 'सिंहासन

बत्तीसी' में विक्रमादित्य के सिंहासन की बत्तीस पुतलियों का उल्लेख है। भारत से पूर्वी एशिया के देशों इंडोनेशिया, थाईलैंड, म्यांमार, जावा, श्री लंका आदि में इसका विस्तार हुआ आज यह कला चीन, रूस, रूमानिया, इंग्लैण्ड, चेकोस्लावाकिया, अमेरिका व जापान आदि अनेक देशों में पहुंच चुकी है। इन देशों में इस विद्या का सम-सामयिक प्रयोग कर इसे बहुआयामी रूप प्रदान किया गया है।

भारत में पारम्परिक पुतली नाटकों की कथावस्तु में पौराणिक, साहित्य, लोक कथाओं तथा किवदंतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पहले अमर सिंह राठौड, पृथ्वीराज, हीर-रांझा लैला-मजनू एवम् शीरी फरिहाद की कथाऐं ही कठपुतली खेल में दिखाई जाती थीं, परन्तु अब सम-सामयिक विषयों, महिला शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, परिवार नियोजन के साथ-साथ व्यंग्य ज्ञानवर्धक व अन्य मनोरंजन कार्यक्रम दिखाए जाने लगे हैं। कठपुतलियों का उपयोग सम्प्रेषण के लिए प्राचीन समय से हो रहा है यह शिक्षा देने के लिए एक उत्तम दृश्य व श्रव्य साधन है।

देश की 74.4 प्रतिशत साक्षरता दर वाली आबादी शिक्षित है व आधुनिक तकनीक वाले कई माध्यम रेडियो, टीबी, इन्टरनेट आदि आधुनिक तकनीकी के साथ जीवन यापन कर रहे हैं। परन्तु देश की 25.96 प्रतिशत आबादी ऐसी है जो ग्राम व जंगलों के निकट आदिवासी क्षेत्रों में निवास करती है, जो अशिक्षित होने के कारण वैज्ञानिक तकनीकियों, शिक्षा, जन सम्प्रेषण व आधुनिक संचार के माध्यम से वंचित है। इन ग्रामीण व आदिवासी निवासियों के लिए कठपुतलियों का रंगमंच, स्वास्थ्य कृषि, साक्षरता तथा सफाई की शिक्षा देने में आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है। कठपुतली नाटक देखने वाले दिल बहलाने के लिए आते हैं, किन्तु एक नया विचार लेकर जाते हैं खेल को देखते हुए पढ़े लिखे व अपढ़ दोनों ही के मन में एक अच्छे समाज का चित्र आता है। इसके माध्यम से हम आधुनिक ग्रामीण व आदिवासी लोगों की मदद कर सकते हैं, उन्हें प्रचार प्रसार व वंचित सामग्रियों व आधुनिक जीवन शैली से परिचित करा सकते हैं।

भारत के विभिन्न भागों में नाना प्रकार की कठपुतलियों का विकास हुआ प्रत्येक पुतलियों का अपना अलग रूप था। पौराणिक कथाओं, लोक कथाओं तथा स्थानीय किवदंतियों के अनुसार कहानियों को अपनाया गया।

कठपुतली कला ने चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य तथा नाटक के तत्वों को आत्मसात् किया एवम् कलात्मक अभिव्यक्ति के अनूठे अवसरों का निर्माण किया। यहाँ विभिन्न प्रकार की कठपुतलियाँ पाई जाती हैं- जैसे छाया पुतलियों में कर्नाटक की तोगालू गोम्बेयाटा, ओड़िसा की रावण छाया, आंध्र प्रदेश की थोलू बोम्मालाटा। दस्ताना पुतली में केरल की पावाकूथु । छड़ पुतलियों में बिहार की यमपुरी, बंगाल-ओड़िशा-असम क्षेत्र की पुतुल नाच। धागा पुतलियों में ओड़िशा की कंढेई, कर्नाटक की गोम्बेयाटा , तमिलनाडु की बोम्मालाट्म तथा राजस्थान की कठपुतली। राजस्थान की कठपुतली लोक कला भारत व पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। ये लोक कला राजस्थान के नागौर तथा मारवाड़ जिले के भाट आदिवासी जाति के लोगो का पारम्परिक व्यवसाय भी है, राजस्थान के गांव में कोई भी मेला, धार्मिक त्यौहार कठपुतली नाच के बिना अधूरा है।

कठपुतली राजस्थानी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है कठ का अर्थ होता है लकड़ी तथा पुतली का अर्थ होता है गुड़िया अर्थात लकड़ी से बनी हुई गुड़िया जिसमें धागे व तार के माध्यम से उंगलियों पर नचाया जाता है। खाट के माध्यम से एक मंच तैयार किया जाता है जिस पर तख्त लगाया जाता है कठपुतली को धागे से बांधा जाता है, जो ऊपर से गुजरती है तथा उसका छोर कठपुतली कलाकारों के हाथ में होता है। कठपुतली नाच की शुरूआत ढोलक थाल से होती है ढ़ोलक वाली महिला शिवजी की स्तुति गाती है।

बैल चढै शिव जी मिले, पूरण हो सब काम।

खेल कठपुतली करां, लेके हरि का नाम ।।

कठपुतलियाँ सामान्यतः लकड़ी से तराशी गई 8 से 9 इंच की लघु मूर्तियाँ होती हैं। त्वचीय रंग वाली लकड़ी को रंगने तथा आंख, होंठ नाक आदि जैसी अन्य मुखाकृति व अंग बनाने के लिए शरीर के साथ लकड़ी के छोटे-छोटे पाइप को जोड़ा जाता है तत्पश्चात् शरीर को रंगीन लघु पोशाक से ढका जाता है। इन्हें पारम्परिक चटख उज्जवल राजस्थानी पोशाक पहनाई जाती है, यथार्थवादी अनुभूति देने के लिए आभूषण व अन्य श्रंगार सामग्रियां संलग्न की जाती हैं। ये कठपुतलियां सौंदर्य व कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर व शोभनीय है, इन्हें धागे से हाथ, सिर व शरीर की पीठ में

छोटे छेद से जोड़ा जाता है इसके बाद इसे कठपुतली कलाकार द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ये कलाकार प्रदर्शन कार्य करते समय कठपुतली बोलती है का भ्रम पैदा करते हैं तथा वह आवाज कलाकार द्वारा उत्पन्न की जाती है। कठपुतली कला का ललित कलाओं में भी प्रभाव है। राजस्थान की प्राचीन लोक कथायें, लोक साहित्य एवं लोक संगीत कठपुतली कला का अभिन्न अंग है जिसके माध्यम से यह जनमानस को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ अपनी संस्कृति के प्रति भी जागरुक व सचेत बनाती है। आधुनिक समय में कुछ ऐसे लेखक व कवि जो कठपुतलियों पर कहानी, नाटक तथा कविताये लिखते हैं, तथा ऐसे कलाकार जो कठपुतली को विषय वस्तु बनाकर चित्रण कार्य करते हैं, जैसे- भारतीय कलाकारों में मावरा तहरीन, बिन्दु विश्वनाथन, आरती वोहरा, शीतल भाटिया तथा पाश्चात्य कलाकारों में पॉल क्ली, एडरिन बोरडा, जेसी विलकोक्स स्मिथ, एन्जेल जेरेज आदि।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध प्रारम्भ करने से पूर्व, उस विषय पर किये गये शोध, उससे सम्बन्धित साहित्य व शोध पत्रिका आदि का गहन अध्ययन व अवलोकन अत्यन्त आवश्यक है। शोध विषय से जुड़े साहित्य का पुनरावलोकन करने से हम अपने शोध को वर्तमान व भविष्य की परिस्थितियों के अनुरूप अधिक तथ्यपूर्ण व निश्चयात्मक बना सकते हैं। इसी प्रकार मैंने अपने शोध को उपयुक्त व तर्कपूर्ण बनाने के लिए विभिन्न पुस्तकों व इन्टरनेट वेब्साइट्स का अध्ययन किया। जैसे- मंजुला चतुर्वेदी की पुस्तक भारतीय लोक कला के अभिप्राय से कला साहित्य एवं संस्कृति, लोक कथाऐं एवम लोक गीत आदि का अध्ययन किया। अपने शोध विषय चयन हेतु नितिन सिंघानिया की पुस्तक भारतीय कला एवं संस्कृति का अध्ययन किया जिससे मैंने कठपुतली कला के विषय में जानकारी प्राप्त की। महेन्द्र भानावत की पुस्तक शिक्षाप्रद कठपुतली नाटिकाऐं (दस्ताना, छड़ तथा धागा शैली की कठपुतली नाटिकाऐं) से दस्ताना, छड़ तथा धागा शैली की कठपुतली नाटक द्वारा किस प्रकार शिक्षण देने में योगदान करती है का अध्ययन किया। **Sampaghosh And Utpal K. Banerjee** की पुस्तक **Indian Puppets** का अध्ययन कर भारत में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की कठपुतलियों का गहन अध्ययन किया। डॉ महेन्द्र वर्मा की पुस्तक भारतीय चित्रकला की परम्परा तथा डॉ. अज्ञात की पुस्तक लकड़ी का तन क्षण भर जीवन, देवीलाल सामर की कठपुतलियाँ और मानसिक रोगोपचार इन पुस्तकों के

अध्ययन के फलस्वरूप मैंने विभिन्न लोक कलाओं के उद्भव उनके स्वरूप के साथ-साथ कठपुतली कला के विकास, उनके प्रकार तथा कठपुतली कला का मानव जीवन में योगदान पर अध्ययन किया। अपने इस शोध में मैं कठपुतली कला का साहित्य संगीत एवं संस्कृति में समन्वय के साथ-साथ उसके कलात्कम पक्षों पर विस्तृत अध्ययन करूँगी तथा राजस्थान की कठपुतली कला के विशेष संदर्भ में इस अध्ययन को प्रस्तुत किया जायेगा।

परिकल्पना

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि उसके शोध की परिकल्पना एकदम स्पष्ट व अर्थपूर्ण हो। शोध प्रारम्भ करने से पहले शोध परिकल्पना को तैयार करना अति आवश्यक होता है। जिससे हम अपने उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सकें व शोध पर केंद्रित रह सकें।

कठपुतलियाँ हमारे जीवन में शैक्षणिक एवम् सांस्कृतिक रूप से महत्व रखती हैं, तथा कठपुतली कला लोक संगीत, लोक साहित्य व संस्कृति का समन्वय है। राजस्थान की प्रचलित कठपुतली कला कलात्मक व सौंदर्यात्मक तत्वों से परिपूर्ण है। कठपुतली कला का आधुनिकीकरण एवम् वर्तमान समय में उसकी बहुत उपयोगिता है, पर्याप्त ज्ञान व जागरूकता के अभाव के कारण विलुप्तता के कगार पर खड़ी इस लोक कला से सभी को परिचित करवाना व कठपुतली कला हेतु लोगों में जागृति उत्पन्न करना महत्वपूर्ण है, इसी परिकल्पना के आधार पर मैं अपना अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

उद्देश्य

किसी भी शोध को प्रारम्भ करने से पूर्व शोधकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह अपने उद्देश्यों को निश्चित व स्पष्ट करले, जिससे वह अपने शोध को एक निर्धारित रूपरेखा प्रदान कर सके।

1. राजस्थान की कठपुतली कला का क्रमिक विकास एवं उसके महत्व पर विवेचन करना है।
2. कठपुतलियों का शैक्षणिक, लोक संगीत, लोक साहित्य एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण समन्वय से अवगत कराना है।
3. राजस्थान की कठपुतलियों के प्रकार एवं विशेषताओं का विवरण।
4. कठपुतलियों की निर्माण प्रक्रिया तथा विषय वस्तु का विवरण।
5. राजस्थान की कठपुतलियों का वेशभूषा, आकार तथा रंग योजना आदि के विषय में अध्ययन।

6. राजस्थान की प्रचलित धागा कठपुतली कला का रंगमंच एवं उसकी सज्जा।

7. राजस्थान की कठपुतली कला के प्रमुख कलाकारों का अध्ययन।

चर

- स्थानीय भ्रमण
- विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालय
- विभिन्न कला पुस्तकालय व संग्रहालयों के अध्यक्षों से वार्तालाप
- स्थानीय कलाकारों/कारीगरों से साक्षात्कार
- पुस्तकें
- समाचार पत्र पत्रिकायें
- इन्टरनेट वेब्साइट्स

कार्य प्रणाली –

अनुसन्धान अभिकल्प - इस शोध का अध्ययन वस्तु विश्लेषण विधि द्वारा वर्णनात्मक अनुसन्धान शैली पर आधारित रहेगा।

प्रदत्त संकलन - प्रदत्तों के एकत्रीकरण का स्वरूप प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतो पर आधारित रहेगा।

- **प्राथमिक स्त्रोत** - राजस्थान की कठपुतलियों के मंचन का अवलोकन, संग्रहालयों में संग्रहित विभिन्न कठपुतलियाँ, सम्बन्धित क्षेत्र की कठपुतलियाँ।
- **द्वितीयक स्त्रोत -** पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें, कठपुतलियों के चित्र, इण्टरनेट वेब्साइट्स व पुस्तकालय भ्रमण।

प्रतिदर्श आकार

मैं अपने लघु शोध को पूर्ण करने के लिए चित्रों के लगभग 150-200 छाया चित्रों का चयन करूँगी।

सीमायें

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि वह अपने शोध कार्य को अपने संस्थान की समय व सीमा को देखते हुए पूर्ण करने का प्रयास करें। मैंने शोध हेतु राजस्थान की कठपुतली कला का चयन किया तथा उसे

अपने शोध का विषय बनाया। शोध से सम्बन्धित तथ्यों के आधार पर राजस्थान से सम्बन्धित क्षेत्र की कठपुतली कला को अपनी समय सीमा पर पूर्ण करने का प्रयास रहेगा।

निष्कर्ष

कठपुतलियों का रंगमंच पर आयोजित किया जाने वाला कार्यक्रम मनोरंजन के लिए किया जाता है, परन्तु इससे दर्शक का मनोरंजन के साथ-साथ कुछ सीखने को भी मिलता है। क्योंकि आयोजित कार्यक्रम में कहानियाँ, लोक कथाऐं, नाटक, साहित्य आदि से पूर्ण किया जाता है। कठपुतलियाँ निर्जीव होती हैं, परन्तु इनके द्वारा किया गया प्रदर्शन ऐसा होता है, मानो कोई कलाकार अपनी प्रस्तुती दे रहा है। कठपुतली कला नैतिक मूल्यों का विकास, आर्थिक व सामाजिक प्रगति करती है। इन्हें लकड़ी व अन्य माध्यमों से भी बनाया जाता है। विभिन्न योजनाओं का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ चुनाव के समय मतदान के प्रति मतदाता को जागरुक करने का कार्य भी किया जाता है। कठपुतली दल गाँव-गाँव में जाकर परिवार का बड़ा आकार, दहेज प्रथा, नशाखोरी, बालिका शिक्षा आदि कार्यक्रम प्रस्तुत कर जनता को संदेश पहुँचाते हैं।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

आधुनिक समय में कठपुतली कला ने समय की आवश्यकता के अनुसार एक नया रूप धारण कर लिया है, और यह ज्ञान तथा शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण निभा भूमिका रही है। कठपुतली कला परंपरागत हो या आधुनिक इस कला का उपयोग जन शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता लाने के लिए किया जाता है। कठपुतली कला जटिल से जटिल विषय को आसानी से समझाने में सबसे उपयोगी माध्यम साबित हो रही है। हमारे देश में प्रारंभ से ही कठपुतली कला में परंपरागत तथा आधुनिक विषयों, लोक कथाओं व पौराणिक कथाओं का समावेश हुआ है। अधिकांशतः इनमें परंपरा की झलक देखने को मिलती है, क्योंकि वे परिवार जो कठपुतलियों के खेल कराते हैं वे परम्पराओं से अभी तक जुडे हुए हैं। आधुनिक कठपुतली को नए विषय, धरातल तथा परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा है। आज भारतीय कठपुतली कला की विदेशों में धूम मची हुई है। कठपुतली कला में देश में ही नहीं विदेशों में भी रोजगार की उजली संभावनायें हैं। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संस्थान कठपुतली कला के विकास के लिए व्यक्तिगत रूप से

अनुदान प्रदान करते हैं। वर्ष 21 मार्च 2003 से विश्व कठपुतली दिवस मनाया जाता है। वर्तमान समय एवं परिस्थिति को देखते हुए कठपुतली कला के क्षेत्र में भविष्य की संभावनाओं के प्रति आश्वस्त हुआ जा सकता है, टेलीविजन थिएटर तथा अन्य माध्यम इसके कार्यक्षेत्र में शामिल हो रहे हैं।

विषय अनुक्रमणिका

भूमिका – कठपुतली कला का सिंहावलोकन

प्रथम अध्याय - कठपुतली कला एक परिचय

1.1 - भारत में कठपुतली परम्परा का उद्भव एवं विकास

1.2 - वर्तमान राजस्थान में कठपुतली परम्परा एवं उसका ऐतिहासिक विश्लेषण

द्वितीय अध्याय - कठपुतलियों के प्रकार, विशेषताऐं एवं उसकी निर्माण प्रक्रिया

2.1 - धागा कठपुतली

2.2 - छाया कठपुतली

2.3 - दस्ताना कठपुतली

2.4 – छड़ कठपुतली

तृतीय अध्याय - कठपुतलियों का शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक महत्व

3.1 - कठपुतली कला एवं लोक संगीत का समन्वय

3.2 - कठपुतली कला एवं लोक साहित्य का समन्वय

3.3 - कठपुतली कला एवं लोक संस्कृति का समन्वय

चतुर्थ अध्याय - राजस्थान में प्रचलित कठपुतली कला का मंचन, विषय वस्तु एवं सौंदर्यात्मक तत्व

4.1 - आकृतियों का आकार

4.2 - रंग योजना

4.3 - वेशभूषा

4.4 - संचार कौशल

4.5 - रंगमंच की सज्जा एवं निर्माण

पंचम अध्याय - राजस्थान की कठपुतली परम्परा के प्रमुख कलाकार

षष्ठम अध्याय - कठपुतली कला का आधुनिकीकरण, एवं अन्य ललित कलाओं में प्रभाव

उपसंहार

परिशिष्ट - सन्दर्भ

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

Internet Websites

चित्र फलक सूची

अनुसन्धान अभिकल्प

भूमिका - भूमिका के अन्तर्गत कठपुतली कला पर एक विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रथम अध्याय - भारत में कठपुतली कला का परिचय देते हुए कठपुतली कला का उद्भव एवं विकास तथा वर्तमान राजस्थान में कठपुतली कला एवं उसका ऐतिहासिक विश्लेषण पर अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय - कठपुतलियों का शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला जायेगा। जिसके अन्तर्गत राजस्थानी कठपुतली कला एवं लोक संगीत का समन्वय, राजस्थानी कठपुतली कला एवं साहित्य का समन्वय, राजस्थानी कठपुतली कला एवं संस्कृति का समन्वय पर अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।

तृतीय अध्याय - राजस्थानी कठपुतलियों के प्रकार, विशेषताऐं एवं उसकी निर्माण प्रक्रिया का वर्णन करते हुए धागा कठपुतली, छाया कठपुतली, दस्ताना कठपुतली, छड़ कठपुतली आदि का वर्णन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय - राजस्थान में प्रचलित धागा कठपुतली कला का मंचन, विषय वस्तु एवं सौंदर्यात्मक तत्वों का वर्णन करते हुए कठपुतलियों के आकार, रंग योजना, वेशभूषा, संचार कौशल, रंगमंच की सज्जा एवं निर्माण प्रक्रिया का कलात्मक अध्ययन करूँगी।

पंचम अध्याय - राजस्थान की कठपुतली परम्परा के प्रमुख कलाकारों का गहन अध्ययन कर विवरण प्रस्तुत करूँगी।

षष्ठम अध्याय - कठपुतली कला का आधुनिकीकरण, एवं अन्य ललित कलाओं में उसका क्या प्रभाव है पर विवेचन किया जायेगा।

उपसंहार - इसके अन्तर्गत कठपुतली कला का कलात्मक विश्लेषण करते हुए आधुनिक युग में उसकी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता पर चर्चा की जायेगी।

संदर्भग्रंथ सूची

- अज्ञात, (1998) - लकड़ी का तन क्षण भर जीवन भारतीय, लोक कला मंडल, मंगल मुद्रण, चेटक संकिल
- बंसल, दिनेश चन्द्र, (2004) - कठपुतली शिक्षण - भारतीय लोक कला मंडल, मंगल मुद्रण, चेटक संकिल
- ब्रुक्स, एलनर, (1944) - कैसे बनायें कैसे चलायें कठपुतली,साक्षरता निकेतन प्रकाशन
- भानावत, महेन्द्र, (2002) –शिक्षाप्रद कठपुतली नाटिकाऐं (दस्ताना, छड़ तथा धागा शैली की कठपुतली नाटिकाऐं) - पब्लिकेशन- सुभद्रा पब्लिकेशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
- मिश्र बलदेव प्रसाद, मिश्र ज्वालाप्रसाद एवं प्रसाद राय मुंशी देवी - (कर्नल जेम्स टॉडकृत) राजस्थान का इतिहास (जोधपुर, बीकानेर एवं जेसलमेर राज्य का इतिहास) - प्रकाशक यूनिक ट्रेडर्स, टुडे ऑफ प्रिटर्स
- सामर, देवीलाल (1989) - कठपुतलियाँ और मानसिक रोगोपचार - भारतीय लोक कला मंडल, मुद्रक; महावीर प्रिंटिंग प्रेस
- शर्मा, हरद्वारी लाल, (2008) - कला के संगीत, साहित्य और उदात्त के तत्व, प्रकाशक- मानसी प्रकाशन
- सामर, देवीलाल, (1979) - कठपुतली कला और शिक्षा - भारतीय लोक कला मंडल, मुद्रक उपवन प्रिन्टर्स

- सिंघानिया, नितिन, (2019) - भारतीय कला एवं संस्कृति का अध्ययन
- वर्मा, महेन्द्र, (2006) - भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन

Bibliography

- A.S. Rama , (1960) - “Folk Tradition and Modern Art”, The illustrated Weekly of India
- Cimino Rosa Maria, (2002) - Wall Paintings Of rajsthan (Amber And Jaipur) Publication, Aryan Books International
- Gajrani, S, (2004) - “History, Religion and Culture of India”, Isha Books
- Gammon joy, (1996) - Easy to Make Puppets (publisher- Brockhampton Press,
- Government Of India, (1982) - Puppet Theatre In India (Publisher- Ministry Of Education, govt. Of India
- Mishra V.N,(2007) - Rajsthan Prehistoric and Early Historic Foundations, Aryan Books International
- Prakash Om, (2005) - Culture History of India, New Age International (P) Ltd., Publication
- Rao G.V. Krishna, (1997) - Puppets- Keelubommalu, Series- Macmillan Modern Indian Novels In Tranlation
- Samar, Devilal, (1979) - Folk Entertainments of Rajsthan, Bhartiya lok Kala Mandal
- Singh Chitralekha, (1993) - Drawings Of Rajsthan, Aryan Books International

InternetWebsite

- https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Fin.polomap.com%2Fen%2Fudaipur%2F19435&psig=AOvVaw1
- https://www.vpuppets.com/aboutme.ph#;text=Ramdas%padhey%20india.com
- n.wikipedia.org/wiki/Kathputli_(puppetry)
- https://dir.indiamart.com/jaipur/rajasthani-puppet.html
- https://indianculture.gov.in/hi/intangible-cultural-heritage/performing-arts/raavanachaayaa-bhaarata-kai-chaayaa-kathapautalai
- https://www.missionupsce.in/2021/03/art.html
- https://www.livehindustan.com/news/article1-story-154897.html

- https://www.britannica.com/art/puppetry
- https://shivomclasses.com/%E0%A4%95%E0%A4%A0%E0%A4%AA%E0%A5%
- www.google.com
- www.rajsthan
- https://www.tourism. Rajsthan.gov.in

परिशिष्ट

चित्रा सूची

चित्र संख्या – 01 ढोलामारू कथा, बागोर की हवेली संग्रहालय, उदयपुर

चित्र संख्या – 02 विभिन्न प्रकार की कठपुतलियाँ, बागोर की हवेली संग्रहालय, उदयपुर

चित्र संख्या – 03 कठपुतली कला का मंचन, लोक कला मंडल,उदयपुर

चित्र संख्या – 04 सपेरा व साँप का खेल, लोक कला मंडल,उदयपुर

चित्र संख्या – 05 राजस्थान की पारम्परिक कठपुतलियाँ, लोक कला मंडल, उदयपुर